२२) विस्मरण चिन्ह / हंसपद या त्रुटिबोधक चिन्ह (^) :-

जब किसी वाक्य अथवा वाक्यांश में शब्द अथवा अक्षर लिखने में छूट जाता है तो छूटे हुए वाक्य के नीचे हंसपद चिन्ह का प्रयोग कर छूटे हुए शब्द को ऊपर लिख देते हैं।

जैसे - मैं राधा के दिल्ली साथ गया।

२३) लाघव चिन्ह / संकेत चिन्ह (°) -

लघु (छोटा) से लाघव बना है। किसी प्रचलित बड़े शब्द के छोटे रूप (संक्षिप्त रूप) को लिखने के लिए लाघव चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - मध्य प्रदेश - म० प्र०
डॉक्टर → डॉ०

२४) लोप चिन्ह (.....) -

इस चिन्ह का प्रयोग वाक्य में छोड़े गए अंश के लिए, गोपनीय या अश्लील पदों को छुपाने के लिए, रिक्त स्थान को दिखाने के लिए, कहानी आदि में सस्पेंस लाने या उत्तरोत्तर जिज्ञासा बढ़ाने के लिए किया जाता है।

जैसे – गीता ने कहा, " मैं तुम्हारे साथ रहना तो चाहती हूँ, किन्तु कहीं तुम भी ..... छोड़ी जाने दो ।"

२५). दीर्घ उच्चारण या प्लुत चिन्ह (SS) –

हिन्दी में प्लुत स्वरों के उच्चारण में या किसी को पुकारने में इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है ।

जैसे – मोSSहनSS जल्दी जाओ ।

२६). पुनरुक्ति या अनुवृत्ती चिन्ह (,, ,,) –

एक ही शब्द को बार-बार लिखने से बचने के लिए इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है ताकि हमारा समय भी बच जाए और अर्थ भी स्पष्ट हो जाती है कि ऊपर वाला बात ही यहाँ भी लिखा हुआ है ।

जैसे → राम ने 1 किलो सेब खरीदा
सोहन ने 2 ,, ,, ,,
गोलु ने 1 ,, केला ,,

२७). टीका सूचक चिन्ह (* / + / # / 1, 2, 3 ...) —

जब कोई शब्द किसी पैराग्राफ में होता है, और यदि उस शब्द के बारे में कुछ अलग से सूचना देनी हो, तो उस शब्द पर एक चिन्ह लगाया जाता है, और उसी चिन्ह को पैराग्राफ से अलग लगाकर वो सूचना लिखी जाती है, ऐसे चिन्ह को टीका सूचक चिन्ह कहते हैं।

जैसे –

विद्युत - शक्ति तो एक प्रकार का ऊर्जा है जो कभी नाश नहीं होता है बल्कि रूप बदल लेता है। बटन दबाते ही सारा नगर विद्युत की विशुद्ध निर्मल ज्योत्सना* में बदल गया। वर्तमान समय में विद्युत हमारी जीवन के लिए अति आवश्यक चीज बन गई है जिसके बिना अब बेहतर और आसान जीवन की कल्पना नहीं किया जा सकता।

---

* ज्योत्सना चाँदनी का पर्यायवाची शब्द है।

२८) रेखा चिन्ह (———) :-

जिन शब्दों या वाक्यों के विषय में कुछ विशेष अवधारणा देनी होती है, उनके नीचे रेखा चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- मनुष्य जीवनभर कुछ न कुछ सीखने की होड़ में लगा रहता है, ज्ञान की जिज्ञासा उसे सदैव विद्यार्थी बने रखने की चेष्टा होती है, किन्तु स्थूल रूप से मानव-जीवन में ~~विद्यार्थी~~ विद्यार्थी काल बहुत लम्बा नहीं होता है फिर भी विद्यार्थी-जीवन मनुष्य के जीवन का स्वर्णिम काल होता है।

२९) तुल्यतासूचक चिन्ह (=) —

किसी शब्द का अर्थ दिखाने के लिए हम इस चिन्ह का प्रयोग करते हैं।

जैसे- धरा = पृथ्वी

आकाश = अम्बर

20). अथवा चिन्ह (/) —

किसी शब्द के स्थान पर दूसरे शब्द के प्रयोग को दिखाने के लिए अथवा चिन्ह का प्रयोग करते हैं ।

जैसे - गाय अथवा घोड़ा मैदान में है।

↓

गाय / घोड़ा

21) समाप्ति सूचक चिन्ह (.....o.....) :—

किसी लेख, अध्याय अथवा निबंध की समाप्ति पर इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

यह कई तरह से हो सकता है।

———

or

....o....

or

——×——

or

× × ×